April 2025

Monthly Magazine
Year 11 Issue 4

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सतयुग

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

वुधवार सतसंग

प्रत्येक वुधवार प्रात ११ वजे से ११.३० वजे तक

फेसवुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसवुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा एन.आर.एस.पी., प्यारा एन.आर.एस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
एन.आर.एस.पी.,एन.आर.एस.पी.

।। 卐 ।।

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

।। नारायण नारायण ।।

जब टीम सतयुग ने कहा कि इस बार का अंक संस्कारों पर आधारित है तो एक हल्की सी मुस्कान चेहरे पर फ़ैल गई, हमारी सर्वथा से यह कामना रही है कि इस दुनिया का हर एक व्यक्ति संस्कारों से परिपूर्ण हो। जब वो परम पिता अपनी रचना को देखें तो उसे अच्छा महसूस हो।

एक पल के लिए ब्रह्म मुहूर्त का अपना ऑन लाइन सत्र आँखों के आगे घूम गया। ब्रह्म मुहूर्त के समय जब सत्संगी आते हैं कन्फेशन कमिटमेंट के माध्यम से औरों को सुनकर अपने आप को बदलते हैं और अपने रॉयल संस्कारों को अपने भीतर समाहित करते हैं तो मन कृपा से भर उठता है। ब्रह्मांड की व्यवस्था पर मन आश्चर्य चकित हो जाता है कि किस तरह रॉयल संस्कार जन मानस के भीतर समाहित होते जा रहे हैं। एक पिता और युवा बेटे की बातचीत ने मुझे अंदर तक छू लिया।

एक दिन एक नौजवान लड़का अपने पिता से झल्लाते हुए बोला,

'पापा, आप हर बात में नैतिकता, ईमानदारी, संस्कार ये सब क्यों घुसेड़ देते हो? इस दुनिया में इतना आदर्शवादी बन कर कोई कुछ नहीं पा सकता!'

पिता मुस्कुराए और बोले, 'ठीक है, एक काम कर। ज़रा ये पानी का गिलास ले और इसमें एक चुटकी नमक डाल के पी।'

लड़के ने पिया 'बिलकुल ठीक है, पापा।'

फिर पिता ने कहा, 'अब चलो, तालाब किनारे चलते हैं।'

वो दोनों तालाब के पास पहुंचे। पिता ने फिर एक चुटकी नमक दिया और कहा, 'इसे तालाब में डालो और अब वही पानी पीकर देखो।'

लड़के ने पिया और बोला, 'पापा, इसमें तो नमक का स्वाद ही नहीं आया।'

पिता ने मुस्कुरा कर कहा- 'बेटा, जीवन के कड़वे अनुभव जैसे ये नमक हर किसी के हिस्से आते हैं। लेकिन संस्कार ही वो तालाब हैं जो इन अनुभवों की कड़वाहट को फैलाकर उन्हें सहने लायक बना देते हैं।

अगर तेरा मन एक छोटा गिलास ही रहा, तो हर छोटी बात कड़वी लगेगी।

लेकिन अगर तेरे अंदर संस्कारों का विस्तार होगा, तो तू दुनिया की सबसे बड़ी सच्चाइयों को भी मुस्कुरा कर पी जाएगा।'

इतने खूबसूरत और उचित संस्कार सिर्फ़ माता पिता ही दे सकते हैं। आपके माता-पिता इस धरा पर साक्षात ईश्वर का अवतार हैं। उनका आदर करें, कद्र करें उन्हें अपना सर्वोत्तम दें। अच्छाई, सच्चाई और भलाई के मार्ग पर चलें। जितना हो सके भलाई करें सद्मार्ग पर चलें, उस परम पिता का धन्यवाद करें जिसने आपको इस धरा पर जन्म दिया।

शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

-: प्रधान कार्यालय :-

नारायण भवन

टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड़, गोरेगांव (प.), मुंबई

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	9712945552
अकोला	शोभा अग्रवाल	9423102461
अकोला	रिया अग्रवाल	9075322783
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	9422855590
औरंगाबाद	माधुरी धानुका	7040666999
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	7045724921
बैंगलोर	शुभांगीं अग्रवाल	9327784837
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9341402211
बस्ती	पूनम गाड़िया	9839582411
धनबाद	विनीता दुधानी	9431160611
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	8947036241
भोपाल	रेनू गट्टानी	9826377979
चेन्नई	निर्मला चौधरी	9380111170
दिल्ली (नोएडा)	तरुण चण्डक	9560338327
दिल्ली (नोएडा)	मेघा गुप्ता	9968696600
दिल्ली (डब्ल्यू)	रेनु बिज	9899277422
धुलिया	रेणु भटवाल	878571680
गोंदिया	पूजा अग्रवाल	9326811588
गोहटी	सरला लाहोटी	9435042637
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	9247819681
इंदौर	धनश्री शिरालकर	9324799502
जालना	रजनी अग्रवाल	8888882666
जलगांव	काला अग्रवाल	9325038277
जयपुर	प्रीति शर्मा	9461046537
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
झुनझुनू	पुष्पा देवी टिबेरेवाल	9694966254
इचलकरंजी	जय प्रकाश गोयनका	9422043578
कोल्हापुर	राधिका कुमटेकर	9518980632
कोलकत्ता	स्वेटा केडिया	9831543533
कानपुर	नीलम अग्रवाल	9956359597
लातूर	ज्योति भूतड़ा	9657656991
मालेगांव	रेखा गारोडिया	9595659042
मालेगांव	आरती चौधरी	9673519641
मोरबी	कल्पना चोरौड़िया	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	9373101818
नांदेड़	चंदा काबरा	9422415436
नवलगढ़	ममता सिंग्रोडिया	9460844144
नासिक	सुनीता अग्रवाल	9892344435
पुणे	आभा चौधरी	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	9434012619
परतवाड़ा	राखी मनीष अग्रवाल	9763263911
रायपुर	अदिति अग्रवाल	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	9431115477
सूरत	रंजना अग्रवाल	9328199171
सांगली	हेमा मंत्री	9403571677
सिकर (राजस्थान)	सुषमा अग्रवाल	9320066700
श्री गंगानगर	मधु त्रिवेदी	9468881560
सतारा	नीलम कदम	9923557133
शोलापुर	सुवर्णा बलदवा	9561414443
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुधरा	9564025556
टाटा नगर	उमा अग्रवाल	9642556770
राउरकेला	उमा अग्रवाल	9776890000
उदयपुर	गुणवंती गोयल	9223563020
उबली	पल्लवी मलानी	9901382572
वाराणसी	अनीता भालोटिया	9918388543
विजयवाड़ा	किरण झँवर	9703933740
वर्धा	रूपा सिंघानिया	9833538222
विशाखापतनम	मंजू गुप्ता	9848936660
गुडगाँव	मेघा गुप्ता	9968696600
यवतमाल	वंदना सूचक	932521889

अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम

ऑस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
दुबई	विमला पोद्दार	+971528371106
काठमांडू	रिचा केडिया	+977985-1132261
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
शारजाह	शिल्पा मंजरे	+971501752655
बैंकॉक	गायत्री अग्रवाल	66952479920
विराटनगर	मंजू अग्रवाल	+977980-2792005
विराटनगर	वंदना गोयल	+977984-2377821

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

।। नारायण नारायण ।।

पिछले दिनों वॉक पर जाने के लिए निकली । लिफ्ट में एक युवा बहू मिल गई जो अपने २ साल के बेटे के साथ किसी काम से बाहर जा रही थी । उसने मुझे धोक दी, मैं उसे ब्लेसिंग दे ही रही थे, तभी उसके दो साल के बच्चे ने उसका हाथ छुड़ाकर मेरे पाँव छू लिए । मैंने उसे गोद में उठा कर ढेर सारा प्यार किया । वो इतना स्पोंटनियस और इतना भावों से भरा था कि शरीर का एक एक सेल उस बच्चे के संस्कारों को देख भाव विभोर हो गया ।

संस्कार ऐसी प्रक्रिया है, जो सहज ही अपने परिवार, अपने आस पास के लोगों से और अपने आप को बदल कर आप अपने आप को अपग्रेड करते हैं। बस टीम सतयुग ने सोचा चलो इस बार हम अपने पाठकों से संस्कारों के बारे में बात करें ।

आप हमेशा संस्कारों से परिपूर्ण रहें । इन शुभकामनाओं के साथ -

आपकी अपनी
संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

अमेरिका

सिंसिनाती	मेघा अग्रवाल	+1(516)312-4189
कनेक्टिकट	ऊष्मा जोशी	
फ्लोरिडा	बीना पटेल	+1(904)343-9056
शिकागो	चाँदनी ठक्कर	+12247700252
केलिफ़ोर्निया	सुशीला तयाल	+12247700252
न्यू जर्सी	शैली अग्रवाल	+912012842586

we are on net

narayanreikisatsangparivar @narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

||नारायण नारायण||

सतयुग का शंखनाद

नारायण रेकी सत्संग परिवार जाना ही जाता है अपने संस्कारों के लिए। संस्कार अपने रिश्तों को निभाने का, संस्कार अपना सर्वोत्तम देने का संस्कार, ईमानदारी, वफ़ादारी के मार्ग पर चलने का, संस्कार रियेक्ट की जगह रिस्पॉन्स करने का, संस्कार धीमे मीठे स्वर में बात करने का। यह वो संस्कार हैं, जो आपको जीवन में रॉयल बनाते हैं, मनुष्य होने की सही पहचान दिलाते हैं। यह संस्कार हम सबके भीतर समाहित हो जाएँ इसके लिए राज दीदी प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त की प्रार्थनाओं में सूर्य किरण ध्यान साधना के माध्यम से आपको एक नई सोच देती हैं- संस्कारों की सोच, जिस पर सत्संगी चिंतन करते हैं, मनन करते हैं और अपने आप को बदल कर अपने बेस्ट वर्शन के रूप में सामने आते हैं। कन्फ़ेशन कमिटमेंट एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सतसंगी ऑनलाइन आकर बताते हैं कि किस तरह उन्होंने सुना, रॉयल संस्कारों को अपनाया और जीवन को कैसे सप्त सितारा बनाया।

संस्कार शब्द अपने आप में एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। यह महज़ कुछ नियमों या परंपराओं का पालन नहीं, बल्कि वो अदृश्य डोर है जो पीढ़ियों को जोड़ती है, रिश्तों को गहराई देती है, और एक इंसान को बाहर से ही नहीं, भीतर से भी महान बनाती है।

जब एक बच्चा 'कृपया' और 'धन्यवाद' कहना सीखता है, दूसरों की भावनाओं को समझना सीखता है, बुज़ुर्गों के चरणों में सिर झुकाता है ,तो समझिए वो ज्ञान नहीं, संस्कार ग्रहण कर रहा है।

यह वो मूल्य हैं जो किताबों से नहीं, व्यवहार से सीखे जाते हैं। ये माँ की रसोई से लेकर दादी की कहानियों तक, पापा के संघर्ष से लेकर बुआ की फटकार तक हर रूप में मिलते हैं।

आज की तेज़ रफ्तार ज़िंदगी में, जब दिखावे और उपलब्धियों की होड़ लगी है, तब भी जो इंसान 'सम्मान देना', 'शांत रहना', 'धैर्य रखना' और 'सच्चाई से चलना' जानता है वही सच्चे अर्थों में समृद्ध है।

संस्कार व्यक्ति को उसकी जड़ों से जोड़े रखते हैं। और यही जड़ें उसे हवा में ऊँचा उड़ने के बावजूद ज़मीन से जुड़े रहने की शक्ति देती हैं।

जैसे वृक्ष अपनी शाखाओं से नहीं, जड़ों से खड़ा होता है वैसे ही मनुष्य अपने संस्कारों से बड़ा होता है। संस्कारों का गहरा संबंध व्यक्तित्व निर्माण से है। यह हमारे आत्मविश्वास, सोच और आचरण को संवारने का कार्य करता है। संस्कार किसी भी व्यक्ति के जन्म से पहले नहीं बल्कि उसके परवरिश, परिवार, समाज और अनुभवों से प्राप्त होते हैं। ये वे मूल्य हैं, जो व्यक्ति को अच्छे आचरण, समर्पण, सच्चाई, और दूसरों के प्रति सहानुभूति का अहसास कराते हैं। संस्कारों का गहरा संबंध व्यक्तित्व निर्माण से है। यह हमारे आत्मविश्वास, सोच और आचरण को संवारने का कार्य करता है। संस्कारों का अर्थ केवल बाहरी दिखावे से नहीं होता, बल्कि यह हमारे भीतर की सही समझ और आंतरिक अनुशासन को दिखाता है। संस्कार वह अनमोल धरोहर है जो पीढ़ी दर पीढ़ी हमसे जुड़ी रहती है, और हमें अच्छे जीवन के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। एक अच्छा संस्कार हमें सच्चे इंसान बनने की ओर उन्मुख करता है, जो समाज के प्रति ज़िम्मेदारी महसूस करता है और अपने परिवार एवं रिश्तों के प्रति कृतज्ञ होता है। भारतीय संस्कृति की आत्मा उसके संस्कारों में बसती है। जिस प्रकार शरीर को जीवित रखने के लिए आत्मा का होना आवश्यक है, वैसे ही हमारी महान परंपरा को जीवंत रखने के लिए संस्कारों की उपस्थिति अनिवार्य है।

॥ 卐 ॥

संस्कार, भारतीय संस्कृति की धड़कन हैं। 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, अतिथि देवो भव' जैसी शिक्षाएँ केवल वाक्य नहीं, बल्कि पीढ़ियों से सहेजी गई मान्यताएं हैं, जो हर भारतीय के व्यवहार में झलकती हैं।

यहाँ बच्चे को जन्म से पहले ही गर्भ-संस्कार मिलते हैं, और जीवन के हर पड़ाव पर उसे कोई न कोई संस्कारिक शिक्षा दी जाती है चाहे वह अन्नप्राशन हो, विद्यारंभ हो या विवाह-संस्कार।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को धर्म से भी ऊपर स्थान दिया गया है, क्योंकि धर्म का पालन भी तब ही संभव है जब व्यक्ति के भीतर नैतिक चेतना और कर्तव्य की भावना हो।

यहाँ संस्कार केवल व्यक्ति का नहीं, समाज का निर्माण करते हैं।

एक संस्कारी नागरिक, एक मजबूत राष्ट्र की नींव है।

आज जब पूरी दुनिया भारत की ओर जीवन मूल्यों, योग, अध्यात्म और संतुलन के लिए देख रही है, तब यह समझना आवश्यक है कि यह सब संस्कारों की परंपरा से ही जन्मा है।

जहाँ पश्चिम में सफलता को उपलब्धियों से मापा जाता है, वहीं भारत में सफलता चरित्र, त्याग और सेवा-भावना से आंकी जाती है।

हमारी संस्कृति हमें सिखाती है कि अहंकार नहीं, विनम्रता में गरिमा है।

दया में वीरता है, और सहिष्णुता में बल है। ये सभी संस्कारों की ही अभिव्यक्ति हैं जो एक साधारण जीवन को असाधारण बना देते हैं।

हमारे संस्कार हमारे कर्मों से पहचाने जाते हैं। यह हर दिन के छोटे-छोटे कदमों में दिखाई देते हैं, जैसे हम दूसरों के साथ कैसे व्यवहार करते हैं, हमारे शब्दों का असर क्या होता है, और हम मुश्किल समय में कैसे निर्णय लेते हैं। संस्कारों का होना हमें सकारात्मक, ईमानदार और निष्ठावान बनाता है, जो जीवन के संघर्षों का सही तरीके से सामना करने की ताकत देता है। संस्कारों की अहमियत तब समझी जाती है जब हम जीवन के कठिन दौर से गुज़रते हैं। वही संस्कार होते हैं जो हमें झुकने नहीं, बल्कि आगे बढ़ने और अपने सिद्धांतों पर कायम रहने की शक्ति देते हैं। यह हमें बताता है कि एक व्यक्ति अपने विचारों, आचरण और निर्णयों से महान बनता है, न कि उसके बाहरी प्रदर्शन से। संस्कार हमें केवल अच्छे इंसान नहीं बनाते, बल्कि हमें अच्छा जीवन जीने की कला सिखाते हैं। ये हमें यह नहीं सिखाते कि दुनिया को कैसे बदलें, बल्कि यह सिखाते हैं कि खुद को बेहतर बनाकर दुनिया में प्रकाश फैलाया जा सकता है।

'संस्कार वह दीपक है, जो बाहर नहीं भीतर रोशनी करता है। और जब भीतर उजाला होता है, तो जीवन की हर राह सुंदर हो जाती है।'

संस्कारों का मतलब यह नहीं है कि हम किसी एक दिशा में चलने के लिए मजबूर हैं, बल्कि यह हमें स्वयं के साथ सच्चे रहने की प्रेरणा देता है। यही असली ताकत है, जो हमें समाज में बेहतर इंसान बनाती है और हमारे जीवन को एक उच्च उद्देश्य देती है।

||नारायण नारायण||

॥ 卐 ॥

संस्कार ऐसे बीज हैं, जो बचपन में बोए जाते हैं और जीवन भर फल देते हैं । परिवार ही पहला स्कूल होता है जहाँ हम बिना किताबों के जीवन जीने की कला सीखते हैं । जब माता-पिता बच्चों के सामने ईमानदारी, सेवा और संयम जैसे गुणों को जीते हैं तो वह गुण बच्चों के स्वभाव का हिस्सा बन जाते हैं । आज की भागती दौड़ती दुनिया में अगर हम अपने परिवार के साथ समय नहीं बिताते हैं तो निश्चित है कि अगली पीढ़ी भावनात्मक रूप से खोखली हो जाएगी ।

परिवार में संस्कार का बीज बोइए वह ही भविष्य में वट वृक्ष बनेगा। बच्चों को उपदेश नहीं उदाहरण दीजिए, जो संस्कार उनमें डालने हैं उन्हें खुद जीना शुरू करें ।

संस्कार एक गहरी छाप छोड़ते हैं, जो जीवन में सबसे बड़े परिवर्तन की कुंजी होती है ।

आइए, हम भी आत्ममंथन करें क्या हम सिर्फ शिक्षा दे रहे हैं, या संस्कार भी बो रहे हैं?

क्योंकि आने वाली पीढ़ी हमारे शब्द नहीं, हमारा व्यवहार और मूल्य विरासत में लेगी ।

ज्ञान मँजूषा

पिछले लंबे अरसे से टीम सतयुग विभिन्न सत्संग में राज दीदी द्वारा बताए जीवन परिवर्तन लाने वाले प्रश्न और उनके उत्तर लेकर आ रहे हैं। इस बार के प्रश्न और उत्तर:-

प्रश्न : जल्द से जल्द मुझे खुशियां हासिल हो और साथ ही मेरे काम आसानी से होते रहे उसके लिए मुझे क्या करना होगा ?

राज दीदी:- आजीवन खुश रहने के लिए हम जो उपाय बताएंगे वह नारायण शास्त्र के अनुसार होगा, जो कि सारे शास्त्रों का सार है। आप यदि इसको फ़ॉलो करेंगे तो निश्चित ही जो अपने जीवन में पाना चाहते हैं वो पा लेंगे।

राधिका के माध्यम से उत्तर- यह बात उन दिनों की है जब न्यूज़पेपर का बोलबाला था, जैसे आज मोबाइल का बोलबाला है। न्यूज़पेपर की यह खासियत थी कि लोगों के दिन की शुरुआत न्यूज़पेपर से होती थी और घर में चाहे चार मेंबर हो या पंद्रह मेंबर हो घर में एक ही न्यूज़पेपर आता था और पूरा घर पढ़ लेता था और कई बार तो पड़ोसी भी मांग कर ले जाते थे। एक लैंड लाइन फोन होता था, पूरे घर वाले उसका यूज करते थे। जो मेरे समय के लोग हैं उन्हें यह ज़रूर पता होगा कि लैंडलाइन की घंटी बहुत ज़ोर से बजती थी और घर में सबको सुनती थी। जो जहां पर होता वहां से चिल्लाता अरे फोन की घंटी बजी है उठाओ। जो आनंद उस एक न्यूज़ पेपर का था, उस एक लैंड लाइन फोन का था वह आनंद आज की युवा पीढ़ी समझ नहीं पाएगी।

राधिका आगे लिखती है कि उन दिनों लोगों के दिन की शुरुआत चाहे न्यूज़ पेपर से होती मगर मेरे दिन के शुरुआत न्यूज़ पेपर से नहीं होती थी। मैं इंतज़ार नहीं करती थी कि न्यूज़ पेपर आएगा और मैं पढूंगी फिर काम करना शुरू करूँगी। कभी कबार एक नज़र जरूर डाल देती थी न्यूज़ पेपर पर ये जानने के लिए कि दुनिया में हो क्या रहा है। लेकिन पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगता है कि मुझे पढ़ने की ज़रूरत ही नहीं थी क्योंकि न्यूज पेपर पूरा भरा पड़ा होता था नकारात्मक समाचारों से और नकारात्मक समाचार तो वैसे भी जंगल में आग की तरह फैल ही जाते हैं।

राधिका आगे लिखती है कि सामने डाइनिंग टेबल पर न्यूज़ पेपर रखा हुआ था, मैंने सहज ही पढ़ना शुरू कर दिया, उस दिन की हेडलाइन थी कि एक प्राइवेट एयरलाइंस को जबरदस्त नुकसान पहुँचा है और पूरा फ्रंट पेज उस न्यूज़ से भरा पड़ा था। क्यों हुआ, कैसे हुआ, क्या क्या गलतियां हुई सारा विस्तार से दिया गया था। सभी भाषाओं के न्यूज़ पेपर में उस एयरलाइन्स के बारे में ही बढ़ा चढ़ा कर लिखा गया था। सारे न्यूज़ पेपर के अंदर के पन्नों में उन लोगों की कहानी लिखी हुई थी जो एक समय सफलता की ऊंचाई पर पहुंचे हुए थे लेकिन पहुंचने के बाद धड़ाम से नीचे गिर गए थे।? इस तरह की नकारात्मक खबरें हमारे सबकॉन्शियस माइंड तक यह संदेश पहुंचाती है कि यदि सफल होना है तो सोच समझ कर होइए, अंत में धड़ाम से नीचे गिर जाओगे।

आगे लिखती है राधिका कि पूरा न्यूज़ पेपर पढ़ने के बाद मेरा दिमाग नेगेटिविटी से भर गया। मैं खबरों के बारे में चिंतन कर ही रही थी और उतने में मेरा बेटा आया और कहने लगा कि मम्मा कल सुबह ९:०० बजे तक मेरा लंच पैक कर देना। मुझे आश्चर्य हुआ कि रविवार के दिन भी उसे कहीं जाना है..! पूछने पर उसने बताया कि उसके

कॉलेज ने विद्यार्थियों का ग्रुप बनाया है और उन्हें प्रोजेक्ट दिया गया है इसलिए उसे जाना होगा। उन लोगों को slum areas में जाना था और वहां के अस्वस्थ लोगों का इलाज कैसे करवाया जाए वह देखना था और बेरोज़गारों को रोज़गार दिलवाना था। वहाँ की साफ सफाई खुद़ भी करनी थी और वहां के लोगों से भी करवानी थी। लोगों को साफ सफाई का महत्व समझाना था।

आगे लिखती है राधिका कि जैसे ही मैंने यह बात सुनी वैसे ही मेरे भीतर की सारी नेगेटिविटी बाहर निकल गई, यह प्रबल भाव के साथ कि दुनिया में अच्छी चीज़ें भी तो हो रही हैं। उसे दिन मैंने ढेर सारी अच्छी खबरें आकर्षित की।

दूसरी खबर मुझ तक यह पहुंची कि हमारे परिचित का बेटा केशव जो कि महज २३ वर्ष का है वह हर रविवार के दिन अपने दोस्तों के साथ जो street children होते हैं, उनको जमा करके उनके नाखुन और बाल काटना, उन्हें नहलाना, पढ़ाना और खिलाना यह सारे कार्य करते हैं और ये सब कुछ वो अपने pocket money से करते हैं। यदा कदा कुछ सहयोग मिल जाता है। साथ ही साथ उनके team में ऐसा है कि यदि आज आप आए हैं, तो अगली बार आपको एक जन को और लेकर आना है, ताकि group बढ़ता चला जाए, सेवा बढ़ती चली जाए।

आगे लिखती है राधिका कि नेगेटिव खबरों की बजाए ऐसी पॉज़िटिव खबरें न्यूजपेपर्स की headlines क्यों नहीं बन सकती है? अब मैं जब भी न्यूजपेपर पढ़ती हूं तब उसमें यह ढूंढती हूं कि कहां कुछ अच्छी खबरें छपी हो, जैसे कि कोई वॉचमैन का बेटा डॉक्टर बन गया, धोबी का बेटा sports में मेडल लाया। अब मेरी पड़ोसन जब भी मुझसे आ कर कहती है कि फलाना पेपर में यह हैडलाइन है कि वहां इतने लोग मारे गए तब मैं उसे कहती हूं कि पेपर में यह भी तो न्यूज़ छपी है कि वॉचमैन का बेटा डॉक्टर बन गया। भोजन करते वक्त हम डाइनिंग टेबल पर सारी सकारात्मक बातें डिस्कस करते हैं, उपलब्धियां को सेलिब्रेट करते हैं।

आगे लिखती है राधिका कि मैं अपनों की उपलब्धियों को तो सेलिब्रेट करती ही हूं और अनजानों की उपलब्धियों को भी सेलिब्रेट करती हूं। मुझे कहीं से कोई भी सकारात्मक खबर मिलती है जैसे कि किसी ने अपनी जिंदगी में कुछ हासिल किया हो, उस व्यक्ति को मैं जानती भी नहीं हूं तो भी मैं उसे सेलिब्रेट करती हूं।

हमने उनसे पूछा कि आप कैसे सेलिब्रेट करते हो? उसने कहा घर में कुछ मीठा बनाती हूं, भगवान के सामने भोग धरती हूं, धन्यवाद करती हूं कि उसके घर में खुशियां आई और प्रसाद सर्वत्र बाँटती हूं।

आगे लिखती है राधिका कि अब जब मैं ऐसा कर रही थी तो मैं यह देख रही हूं कि मेरा जीवन पहले से कितना बेहतर होता चला जा रहा है, आसान होता जा रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि मेरे काम बहुत आसानी से होते चले जा रहे हैं। जब मुझे इस बात का एहसास हुआ तो मैंने यह ठान लिया कि जो मैं कर रही हूं उसे मुझे आगे भी करना है। लिखती है राधिका कि मैंने तो ठान लिया, आपका क्या इरादा है? अच्छी बातों की ही चर्चा करनी है, अच्छी बातों को ही सेलिब्रेट करना है।

जब हम स्कूल में थे तो कुछ प्रश्नों के उत्तर हमें विस्तार में लिखने होते थे और कुछ पांच प्रश्न ऐसे भी होते थे कि

उनके उत्तर एक लाइन में लिखने होते थे । विस्तार में तो हमने आपको इसका उत्तर दे दिया। आपके प्रश्न का एक लाइन में उत्तर यह है कि जल्दी-जल्दी खुशियां जीवन में आए, काम आसान होते चले जाएँ आप चाहते हों कि आपका जीवन खुशियों से भर जाए तो सीधा सरल काम आपको यह करना है कि दूसरों को खुशियां बांटना शुरू कर दीजिए। सामने वाले को खुशी मिले, सुख मिले ऐसा करना शुरू कर दीजिए, तो खुशियां आपका घर ढूंढते हुए खुद ही आ जाएंगी, आपको अपने लिए efforts नहीं डालना पड़ेगा। दूसरा, आप चाहते हैं कि आपके काम आसान और सरल होते चले जाएँ तो दूसरों के काम आसान करने में मदद करें, आपके काम अपने आप ही आसान और सरल होते चले जाएंगे। आपका काम कब रुकता है जब दूसरों के कामों में आप पंगा करते हैं। Is it clear?

प्रश्नः- नेम, फेम मनी प्राप्त करने का सरल उपाय बतायें?

राज दीदीः- इस प्रश्न का मैं आपको एक मराठी प्रवचन के माध्यम से दूँगी । मराठी प्रवचन कर्ता ने कहा कि मैंने कुछ दिनों पहले आशा भोसले जी का इंटरव्यू सुना था। उस इंटरव्यू में आशा दीदी ने कहा कि वह एक बहुत ही गरीब परिवार से हैं । उनके सब भाई बहनों की उम्र बहुत लंबी रही। लता दीदी ९४ साल की होकर खत्म हुई। दूसरी बहन ७५ की है, उनका भाई ८४ वर्ष का है और डायबिटीज, बीपी किसी को भी नहीं है और सबके पास गुड नेम, फेम, मनी है यह आप सब जानते हैं। आशा भोसले जी ने आगे कहा 'तुम्हाला काय वाटते या मागे काय कारण असेल?' हम लोग अच्छे नेम और फेम के साथ इतनी उम्र तक इतनी आगे पहुंचे हैं इसका क्या कारण हो सकता है? कई celebrities के ऊपर उंगली उठी है लेकिन इन सबके नाम पर कभी भी कोई उंगली नहीं उठी। इनका नाम हमेशा respect के साथ लिया गया है। आशा दीदी ने कहा कि वे लोग जब छोटे थे तब लता दीदी ने 'कुठे तरी ऐकले होते' (कहीं पर सुना था) यदि माता-पिता के चरण धोकर पीते हैं 'तर आयुष्य वाढतो' (उम्र लंबी होती है)। यह सुनने के बाद लता दीदी ने तय कर लिया था कि यह तो मुझे करना ही है और पिताजी हमें उनके पैर धोने नहीं देंगे यह भी उन्हें पता था। एक दिन उनके पिताजी सो रहे थे तो लता दीदी ने उनके पैरों तले पानी डाला, पानी डालते ही वह उठ गए और पूछने लगे कि क्या कर रहे हो ? उन्होंने यह कहा कि पिताजी आपके पैरों में हम मसाज कर रहे हैं। लता दीदी को उनके पिताजी ने कहा कि अभी मैं सो रहा हूं अभी मसाज मत करो। तब तक लता दीदी एक गिलास पानी उनके पैरों पर डाल चुकी थी। वह चरणामृत लता दीदी और उनके सभी भाई, बहनों ने पिया। उसका नतीजा यह है कि आज उन सभी को गुड नेम फेम, मनी की प्राप्ति हुई है।

प्रश्न : दीदी कई बार कुंडली में पितृ दोष होने पर कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तो पितृ दोष को ठीक करने के लिए दीदी कोई उपाय बताईए।

राज दीदीः- पितृदोष हमें कब पता चलता है ? जब हम जन्म कुंडली दिखाते हैं। है ना ? मुझे तो ये समझ में आ रहा है। जब जाके दिखाओगी तो ही पता चलता है कि कुंडली में पितृदोष है। जब हमारा अच्छा समय चल रहा

होता है, तो जन्म कुंडली जाकर दिखाते हैं क्या ? यह पूछते हैं क्या, कि कब तक चलेगा ऐसा? जब समय ठीक नहीं चल रहा होता है तब जाकर आप जन्म कुंडली दिखाते हैं। बराबर ..? आपने कुंडली दिखाई तब आपको पता चला कि पितृदोष है। फिर भाव मन में आया कि दोष होगा तो भुगतान भी भुगतना पड़ेगा। अब मुझे ये बताओ कि पित्तर जी किसे कहते हैं ? जहां तक मुझे समझता है वो ये है कि हमारे घर में जो बड़े बूढ़े थे, दादा परदादा उन सभी को हम पितृ देवता में काउंट करते हैं। बराबर...? जीते जी उन्होंने आपको कोई परेशानी दी क्या तो मरने के बाद क्यों देंगे ? अब इसको ये समझ लो ये पितृदोष नहीं है, ये स्पैलिंग मिस्टेक है। नारायण शास्त्र बोलता है देखो, आपके पित्तर जी दुःखी हैं और रोष- रोष यानि उन्हें क्रोध आया हुआ है, वे क्रोधित हैं। दुःखी क्यों हैं ? पहले वो समझते हैं। आप जन्म कुंडली दिखाने क्यों जाते हैं ? जब दुःखी होते हैं। आपको दुःखी देखकर उन्हें दुःख हो रहा है। इसलिए वो दुःखी हैं। इतना समझा ? मान्य है क्या ? कि आपको दुःखी देखकर वह दुःखी हैं। उनको आपके ऊपर क्रोध क्यों आता है ? यह अवस्था कब आती है ? जब आप ऐसा कुछ करते हैं जो बुरा है, गलत है, अनुचित है। तो उन्हें इस बात पर क्रोध आ रहा है कि यह गलत कार्य क्यों कर रहा हैं ? अब हम लोगों ने क्या किया ? हम लोगों ने 'द' दुःख से ले लिया और रोश से 'श' ले लिया।

कुंडली में पितृ दोष है, यह जब आपको पता चलता है तो आपको आत्म अपना चिंतन करना चाहिए है कि हम क्या गलत कर रहे हैं ? कई लोग हमारे पास ऐसे भी आते हैं जो यह बोलते हैं कि हम ने तो जाकर कुंडली दिखाई पितृदोष पाया, पूजा पाठ करा दी, इसके बाद भी यह दोष हटा नहीं है। अरे जब तक गलतियां करते रहोगे तब तक यह नहीं हटेगा। समझ म आयो के...? आपको समझा क्या ? तो जो गलत है, अनुचित है वह कार्य करना बंद कर दीजिए, यह दोष हट जाएगा। आप next time जन्म कुंडली दिखाने को जाओगे तो पितृ देवता प्रसन्न हैं, ऐसा कहा जाएगा।

युवा मंच

हमारे संस्कार ही हमारी असली धरोहर हैं - यह कथन सौ प्रतिशत सही है।

हर सभ्यता की असली धरोहर उसके संस्कार ही होते हैं। यूँ तो प्राकृतिक धरोहर को संभालना हर मानव का मूलभूत कर्तव्य है पर हर मानव किसी न किसी देश व काल की सीमाओं में बंधा हुआ हैं। जिस देश में वो रहता है उसकी संस्कृति का ज्ञान, उसका पालन व अपनी संस्कृति से आने वाली पीढ़ी को परिचित कराना व साथ ही उसका अनुसरण करवाना, यह हमारा प्राथमिक कर्तव्य होना चाहिए।

संस्कारों के दो मुख्य रूप होते हैं: आंतरिक और बाहरी। आंतरिक रूप जीवन-चर्या और नियमों से संबंधित है, जबकि बाहरी रूप रीति-रिवाज़ों से संबंधित है। संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति में अच्छे गुणों को विकसित करना है।

संस्कारों का प्राचीन भारत में विशेष महत्व था और वे व्यक्ति को इस जीवन और अगले जीवन दोनों में पवित्र बनाते थे।

संस्कारों का निर्माण जन्म से लेकर २१ वर्ष की उम्र तक होता है, इस दौरान बच्चे की आदतें ही संस्कार बन जाती हैं, माता-पिता अपने संस्कारों का प्रभाव बच्चों पर डालते हैं और घर का माहौल भी संस्कारों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

माता पिता ईश्वर तुल्य हैं ऐसा हमारी संस्कृति सिखाती है। श्री गणेश जी ने भी अपने माता-पिता को सर्वोपरि माना और बन गए सभी देवों में प्रथम पूज्य।

बचपन से ही बच्चों को जीवन के मूल्यों से से अवगत कराया जाता है।

अभिभावक जो भी आचरण करते हैं , उनकी देखा देखी बच्चे उन्हें स्वतः ही अपनाते चले जाते हैं।

घर में जब बच्चा देखता है कि माता-पिता प्रातः उठकर, दैनिक क्रियाओं से निवृत हो, ध्यान साधना पूजा अर्चना करते हैं तो बच्चा भी उन्ही चीजों का अनुसरण करने लगता है। अपने से बड़ों से आदर पूर्वक व्यवहार, सगे संबंधियों से प्रेम, अपनी जिम्मेदारियों का श्रद्धापूर्वक निर्वहन- यह सभी संस्कार एक बालक में अपने आप आत्मसात होते जाते हैं। ऐसे बालक जब युवा अवस्था को प्राप्त होते हैं तो वे एक स्वस्थ समाज का निर्माण करते हैं।

नारायण रेकी सत्संग परिवार का युवाओं के लिए पाठ्यक्रम - लीडिंग अ मीनिंगफुल लाइफ- संस्कारों को हाईलाइट करते हुए उनके महत्व की भी जानकारी देता है। हमारे युवा ही हमारे संस्कारों के वाहक हैं। संस्कारों की हमारी धरोहर अब उनके हाथों में हैं।

युवाओं से आवाहन है कि अपनी संस्कृति, अपने माता-पिता, अपने समाज से मिले संस्कारों का खुद़ भी पालन करें और आने वाली पीढ़ियों को भी करायें। इस संदेश को जन जन तक पहुंचाएं।

पूरे विश्व में भारत अपने संस्कारों के लिए माना जाता है।

संस्कार हमारी पहचान हैं। संस्कारों से हमारी शान है।

||नारायण नारायण||

॥ 卐 ॥

बच्चों की फुलवारी

मुझे पिछले दिनों विदेश में रह रहे अपने कुछ वरिष्ठ मित्रों और रिश्तेदारों के साथ एक युवा जोड़े से उनके घर पर मिलने का मौका मिला। हम उस जोड़े द्वारा बनाए गए भारतीय स्वागत नमस्कार, माथा टेक प्रणाम और शिकंजी से अभिभूत थे। जिस लड़की को फेसबुक पेज पर इंडो वेस्टर्न पोशाक में दिखाया गया था, वह एक सुंदर सलवार कमीज और दुपट्टा पहने हुए थी, बहुत ही सुंदर ढंग से सजी हुई थी । हर क्रिया में मुस्कुराहट और आतिथ्य की गर्मजोशी ने हम सभी को... प्यारे संस्कारों को व्यक्त करने पर मजबूर कर दिया। इस प्रकार, यह विषय, हमारे संस्कार, हमारी विरासत हमारी संपादकीय टीम को सुझाया गया और तुरंत, टीम सतयुग ने कार्रवाई शुरू कर दी ।

हमारे भारतीय संस्कार अपनी विरासत में बहुत समृद्ध और जीवंत हैं ।

हम अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के कारण दुनिया से अलग हैं। संस्कार हमें पीढ़ी दर पीढ़ी, दशकों दर दशकों तक दिए जाते हैं। भारतीय संस्कार, संस्कृति हर जीवित और निर्जीव, बूढ़े, बड़े या छोटे को सम्मान देने पर ज़ोर देती है। एक संस्कृति के रूप में भारत का मानना है कि बिना शर्त प्यार, विश्वास, सम्मान और सद्भावना सभी के लिए सात सितारा जीवन को आकर्षित कर सकती है और इस धरती को स्वर्ग बना सकती है। संस्कारों की बात करें तो यह वह भूमि है जहां एकलव्य जैसे शिष्य ने महान द्रोणाचार्य को गुरु की अनुमति के बिना अपना गुरु मान लिया और द्रोणाचार्य की मूर्ति के सामने प्रतिदिन दंडवत करके धनुर्विद्या का अभ्यास किया। जब द्रोणाचार्य को उसकी धनुर्विद्या का पता चला और उन्होंने महसूस किया कि एकलव्य अपनी धनुर्विद्या में अर्जुन से भी आगे निकल सकता है, तो उन्होंने एकलव्य से गुरु दक्षिणा के रूप में उसका अंगूठा मांग लिया। महान शिष्य ने पलक झपकते ही अपना अंगूठा काट लिया, यह जानते हुए कि वह फिर कभी अपने धनुष और बाण का उपयोग नहीं कर सकेगा और अपना अँगूठा गुरु को दे दिया। ये हमारी विरासत के संस्कार हैं। हमारे पास पांडुरंग की कहानी है जहां कृष्ण के एक भक्त पुंडलिक अपने माता-पिता के प्रति अटूट भक्ति के लिए जाने जाते हैं, उन्होंने माता पिता की जरूरतों को हर चीज से ऊपर रखा, यहां तक कि जब भगवान उनसे मिलने आए तो उन्होंने उनकी भी उपेक्षा की। पुंडलिक की अपने माता-पिता के प्रति भक्ति से प्रभावित होकर, कृष्ण ने पुंडलिक के दरवाजे पर विठोबा के रूप में अपना रूप प्रकट किया । ईंट और वादा: पुंडलिक ने अनुरोध किया कि विठोबा आंगन में एक ईंट पर रहें, और अपने भक्तों के साथ हमेशा रहने का वादा किया। विठोबा सहमत हो गए और तब से पंढरपुर में उनकी पूजा इसी रूप में की जाती है । अगर हम अपने पौराणिक ग्रंथों, हिंदू धर्मग्रंथों, लोकगीतों की कहानियों में डूब जाएं, तो वे हमें धर्म, धार्मिकता, आत्म अनुशासन, आत्म नियंत्रण, रिश्ते के महत्व, सच्चाई, ईमानदारी, अखंडता, नैतिकता और परिणामों के महत्व से अवगत कराते हैं। आइए हम अपने संस्कारों का पालन करें और सात सितारा जीवन जिएं।

नम्रता राठी और विनोद राठी को विवाह वर्षगांठ (२० अप्रैल) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता से भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद !

दीदी के छाँव तले

सत्संग से जुड़ कर किस प्रकार सत्संगियों को अपनी ग़लतियों का एहसास होता है और वे नारायण भवन में कन्फ़ेशन कर अपनी ग़लतियों को सुधारते हैं एवं जीवन में बरक़त बढ़ोतरी को सहज ही आकर्षित करते हैं, इस अंक के माध्यम से आप तक।

सकारात्मकता अपनाने का प्रण

मुझे २-३ दिन के लिए बाहर जाना था, परन्तु दोनों बच्चों को घर पर ही सासु माँ और पति के साथ रहना था। मेरे जाने के दो दिन पहले अचानक ही मेरी कजिन ननद घर पर आ गयीं, जो मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगा। मेरे पति को तो पता था पर मुझे नहीं पता था। मैंने पति से भी कहा कि इनको भी अभी आना था, बाद में आ जातीं। तीन दिन बाद जब मैं लौट कर आई तब मुझे पता चला कि ननद की वजह से घर के सभी लोग समय से अपना अपना काम कर सके, पति शॉप जा पाए, और सासु माँ की भी तबियत संभाल ली थी ननद ने। मैं आपसे और मेरी ननद से भी क्षमा मांगती हूँ। आगे से सभी को वेलकम ही करुँगी और नकारात्मक विचार मन में नहीं लाऊंगी।

प्रार्थना हुई फलीभूत

मेरे घर के स्टाफ में पति पत्नी में आपस में नारायण - नारायण हो रहा था रिश्ता टूटने की कगार पर था, मैंने उनके लिए लिखित प्रार्थनाएं भी की। परिणाम- गाँव की पंचायत में उनकी सुलह हो गयी है। आपको धन्यवाद है दीदी।

चर्चा के परिणाम

मेरी जेठानी के बच्चों ने कई बार स्कूल चेंज किया। मैंने उसकी हर जगह चर्चा की। परिणाम यह है कि परिस्थितियों के चलते मेरे बच्चे को भी चार बार स्कूल बदलना पड़ा और एक ट्यूशन टीचर के कहने पर उसे स्कूल में दो साल पीछे करके पढ़ाया। सत्संग से जुड़ी तब गलती समझ में आई। मैं क्षमा चाहती हूँ।

ऑस्ट्रेलिया से शेयरिंग्स

१) पहले नकारात्मक सिचुएशन आने पर यह सोची थी कि मैं ही क्यों? अब सोचती हूँ नारायण ने ऑपरट्यूनिती दी है और स्ट्रांग बनाने के लिए। आपको धन्यवाद।

२) मेरी लिस्ट में लिखे हुए सारे काम पूरे हो चुके हैं, चाहे वो नया घर हो, पति का प्रमोशन हो या बच्चों के स्कूल एडमिशन या मम्मी की स्वास्थय समस्या का समाधान हर क्षेत्र में नारायण की कृपा बरसी है।

३) मेरे बच्चे टी वी और मोबाइल का बहुत ज़्यादा उपयोग कर रहे थे जिसकी वजह से घर में नारायण नारायण सिचुएशन हो रही थी। नवरात्री प्रार्थना में सबसे पहला विश यही लिखा था, और जैसे ही पहले दिन की प्रार्थना पूरी की, बच्चों ने अपने आप ही मोबाइल टी वी छोड़ कर पढ़ना शुरू कर दिया, और अपने काम के प्रति सजग और फोकस्सड हो गए हैं।

४) जब से प्रार्थनाओं से जुड़ी हूँ, कई जैकपॉट्स लगे हैं। घर के तीन बुजुर्ग लोगों के लिए स्वास्थ्य की प्रार्थना की। अब वो तीनों स्वस्थ हैं।

५) मेरा बेटा सिडनी में क्रिकेट प्लेयर है, हमने उसके सिलेक्शन के लिए प्रार्थना की पर उसका सिलेक्शन नहीं हुआ। हम थोड़ा मायूस हुए पर नारायण पर विश्वास किया की नारायण ने हमारे लिए और बेटर सोच रखा है। कुछ ही दिनों बाद उसका और भी बड़े प्लेटफार्म पर सिलेक्शन हो गया है। राज दीदी, आपको कोटि कोटि नमन।

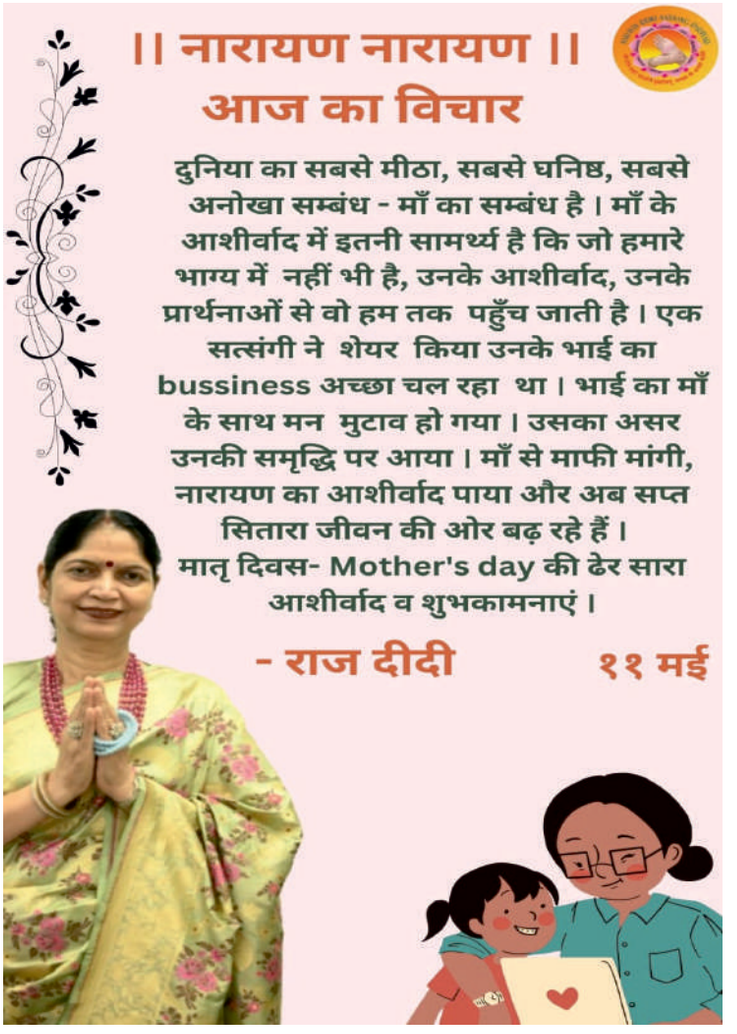

प्रेरणादायक वृत्तांत

संस्कार की थाली

गाँव के एक छोटे से घर में एक दादी माँ रहती थीं, नाम था सरस्वती देवी। उम्र भले ही ७५ पार थी, पर उनका मन आज भी बच्चों जैसा था। उनके साथ उनके बेटे, बहू और पोता आरव रहते थे। आरव अभी दस साल का था, बहुत ही चंचल और तेज़।

दादी माँ रोज़ शाम को आरव को अपने पास बैठाकर कहानियाँ सुनाया करती थीं; रामायण, महाभारत, या कभी अपने बचपन की बातें। एक दिन दादी माँ ने आरव से कहा,

'बेटा, जीवन में कितनी भी पढ़ाई कर लो, लेकिन अगर संस्कार न हों, तो वह शिक्षा अधूरी है।'

आरव ने मासूमियत से पूछा, 'दादी, ये संस्कार क्या होते हैं?'

दादी मुस्कुराईं और बोलीं, 'तू कल सुबह जल्दी उठ जाना, मैं तुझे 'संस्कार की थाली' दूँगी।'

अगली सुबह आरव जगा और दौड़ता हुआ दादी के पास पहुँचा। दादी ने एक थाली में पाँच चीज़ें रखीं

१. एक रोटी,
२. थोड़ा गुड़,
३. एक तुलसी का पत्ता,
४. एक दीया ,
५. एक छोटा आईना।

आरव को आश्चर्य हुआ। दादी बोलीं:

- रोटी सिखाती है बाँटना, कि जो तुम्हारे पास है, उसमें से दूसरों को भी दो।
- गुड़ सिखाता है मिठास, अपने बोलों में, व्यवहार में।
- तुलसी का पत्ता सिखाता है आस्था और परंपरा, जो हमारी जड़ों से हमें जोड़े रखते हैं।
- दीया बताता है प्रकाश बनो, दूसरों के अंधेरे में रौशनी फैलाओ।
- और आईना याद दिलाता है कि हर दिन खुद को देखो , अपने कर्मों का मूल्यांकन करो।

आरव चुपचाप सुनता रहा, फिर बोला, 'दादी, मैं हर रोज़ ये थाली देखूँगा।'

दादी की आँखें भर आईं क्योंकि संस्कार सिर्फ सिखाए नहीं जाते, जीकर दिखाए जाते हैं ।

॥ 卐 ॥

एक रुपये का संस्कार

एक दिन एक महिला अपने सात साल के बेटे नील को लेकर बाज़ार गई। वो पास की मिठाई की दुकान पर रुकी और कुछ समोसे और रसगुल्ले लिए। दुकानदार ने जल्दी जल्दी बिल बनाया और महिला ने रु. २०० का नोट थमा दिया।

बिल रु. १९० का था, लेकिन दुकानदार गलती से रु. १० की जगह रु. २० वापस दे गया।
महिला ने पैसे लिए और चलने लगी। तभी नील ने धीरे से माँ का हाथ खींचा और बोला,
'माँ, उसने रु. १० ज्यादा दे दिए हैं.'
माँ बोली, 'हाँ बेटा, देखा मैंने। पर छोटी सी बात है, जाने दो न।'
नील रुक गया। उसने अपनी गुल्लक निकाली, और रु. १० का सिक्का माँ की हथेली पर रख दिया।
बोला, 'आप ये ले लीजिए, लेकिन उस भैया को उसके पैसे वापस दे दीजिए।'
माँ चौंकी, बोली 'तू क्यों देगा?'
नील की मासूम पर गहरी बात:
'क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से कोई और ग़लत हो जाए।' माँ की आँखें भर आईं।
उसने पलटकर दुकान पर जाकर रु.१० लौटाए।

सीख:

संस्कार उम्र देखकर नहीं आते ,वो तो हर घर के छोटे कोने में बोए गए बीजों से उगते हैं।
कभी-कभी बच्चे वो सीखा देते हैं जो बड़े भूल जाते हैं ईमानदारी, संवेदनशीलता, और सही को सही मानना।

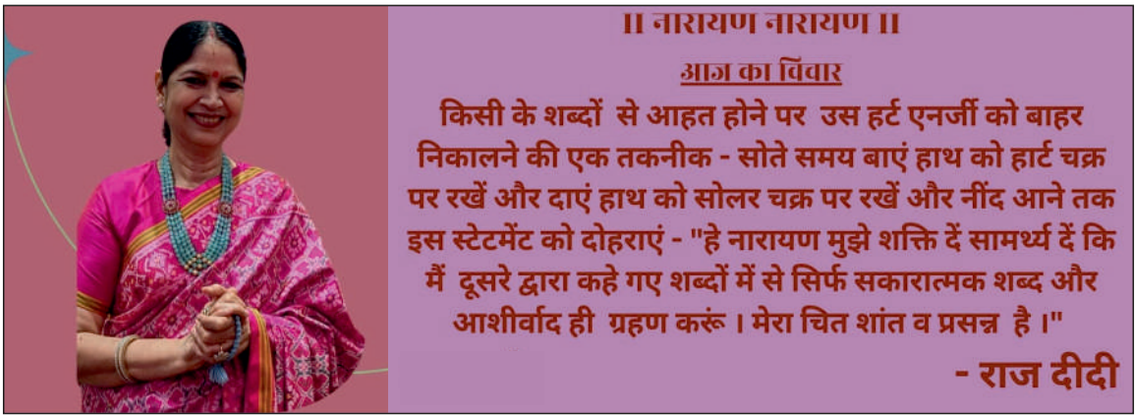

॥ 卐 ॥

ताले की चाबी

शहर के एक नामी स्कूल में एक लड़के ने नया एडमिशन लिया नाम था नमन। पढ़ाई में तेज़, व्यवहार में सौम्य, लेकिन सबसे खास़ बात थी उसका अदब और विनम्रता।

क्लास में एक दिन किसी ने टीचर की डेस्क से उनकी कीमती घड़ी चुरा ली। पूरा स्कूल हिल गया। सब बच्चों के बैग चेक हुए, सवाल-जवाब हुए मगर नतीजा नहीं निकला।

अगले दिन प्रिंसिपल ने सारे बच्चों को हॉल में बुलाया और कहा, 'आज हर कोई आंखों पर पट्टी बांधेगा, और हम सबके बैग फिर से चेक करेंगे।' माहौल भारी था।

जब सबकी तलाशी ली जा रही थी, तो नमन के बैग में वह घड़ी मिल गई।

सब सकते में थे।

लेकिन प्रिंसिपल ने कोई नाम नहीं लिया। बच्चों को आँखों से पट्टी खोलने को कहा और बोले,

'आज मैं सिर्फ सच जानना चाहता था, शर्मिंदा करना मेरा उद्देश्य नहीं था।'

बाद में, नमन अकेले में प्रिंसिपल के पास गया और रोते हुए बोला,

'सर, मैंने वो घड़ी नहीं चुराई थीष्ठ वो तो मेरे बगल में बैठने वाले बच्चे ने रख दी थी। मैं डर गया था, कुछ कह नहीं पाया।'

प्रिंसिपल ने पूछा, 'फिर तुमने चुप क्यों साधी?'

नमन बोला, 'मेरे पापा ने सिखाया है अगर तुम सही हो, तो आवाज़ से नहीं, संस्कार से फर्क दिखाओ। मैं जानता था सच सामने आ जाएगा मुझे शोर मचाना नहीं आता।'

प्रिंसिपल की आंखें भीग गईं।

उन्होंने कहा 'बेटा, ताले की चाबी हमेशा छोटी होती है, पर दरवाज़ा बड़ा खोलती है। तुम्हारे संस्कार वो चाबी हैं जो तुम्हारा भविष्य खोलेंगे।'

सीख:

संस्कार वो विरासत है जो न ज़माना छीन सकता है, न वक़्त मिटा सकता है।

मेघना तापड़िया को विवाह दिवस (५ मई २०२५) को सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता से भरे सप्त सितारा जीवन का आशीर्वाद ।

॥ 卐 ॥

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,

ll Narayan Narayanll

When Team Satyug said that this time's edition is based on Sanskars, a smile crossed my face. It has been our sincere wish that every person in this world should be full of sanskars. When the Supreme Father looks at his creation, he should feel good.

For a moment, my online session of Brahma Muhurta flashed before my eyes. When satsangis come during Brahma Muhurta, they change themselves by listening to others through confession and commitment and incorporate their royal sanskars within themselves, then the mind fills with grace. The mind becomes amazed at the arrangement of the universe, how the royal sanskars are getting incorporated within the minds of people. The conversation between a father and a young son touched me deeply.

One day a young boy said to his father in frustration,

"Papa, why do you try to force morality, honesty, sanskar... into everything? One cannot achieve anything in this world by being so idealistic!"

The father smiled and said, "Okay, do one thing. Take this glass of water and add a pinch of salt to it and drink it."

The boy drank it, "It is absolutely fine, Papa."

Then the father said, "Now let's go to the pond."

They both reached near the pond. The father again gave him a pinch of salt and said, "Put it in the pond and now try drinking the same water."

The boy drank it and said, "Papa, I don't get the taste of salt in it."

Father smiled and said- "Son, everyone has their share of bitter experiences like salt in life. But sanskars are the ponds that spread the bitterness of these experiences and make them bearable.

If your mind remains a small glass, then every small thing will seem bitter.

But if sanskars expand within you, then you will drink even the biggest truths of the world with a smile.

Only parents can give such beautiful and appropriate sanskars. Your parents are the incarnation of God on this earth. Respect them, appreciate them, give them your best. Follow the path of goodness, truth and goodness. Do as much good as possible, follow the right path, thank the Supreme Father who gave you birth on this earth.

Rest all is good,

R. Modi

CO-EDITOR
Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM
Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office
Narayan Bhawan
Topiwala Compound, station road,
Goregaon (West), Mumbai.

Editorial Office
Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

AHMEDABAD	JAIWINI SHAH	9712945552
AKOLA	SHOBHA AGRAWAL	9423102461
AKOLA	RIYA AGARWAL	9075322783
AMRAVATI	TARULATA AGRAWAL	9422855590
AURANGABAD	MADHURI DHANUKA	7040666999
BANGALORE	KANISHKA PODDAR	7045724921
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9341402211
BASTI	POONAM GADIA	9839582411
BIHAR	POONAM DUDHANI	9431160611
BHILWADA	REKHA CHOUDHARY	8947036241
BHOPAL	RENU GATTANI	9826377979
CHENNAI	NIRMALA CHOUDHARY	9380111170
DELHI (NOIDA)	TARUN CHANDAK	9560338327
DELHI(NOIDA)	MEGHA GUPTA	9968696600
DELHI (W)	RENU VIJ	9899277422
DHULIA	RENU BHATWAL	878571680
GONDIYA	POOJA AGRAWAL	9326811588
GAUHATI	SARLA LAHOTI	9435042637
HYDERABAD	SNEHALATA KEDIA	9247819681
INDORE	DHANSHREE SHIRALKAR	9324799502
JALANA	RAJNI AGRAWAL	8888882666
JALGAON	KALA AGARWAL	9325038277
JAIPUR	PREETI SHARMA	9461046537
JAIPUR	SUNITA SHARMA	8949357310
JHUNJHNU	PUSHPA DEVI TIBEREWAL	9694966254
ICHAKARANJI	JAY PRAKASH GOENKA	9422043578
KOLHAPUR	RADHIKA KUMTHEKAR	9518980632
KOLKATTA	SWETA KEDIA	9831543533
KANPUR	NEELAM AGARWAL	9956359597
LATUR	JYOTI BHUTADA	9657656991
MALEGAON	REKHA GARODIA	9595659042
MALEGAON	AARTI CHOUDHARY	9673519641
MORBI	KALPANA CHOUARDIA	8469927279
NAGPUR	SUDHA AGRAWAL	9373101818
NANDED	CHANDA KABRA	9422415436
NAWALGARH	MAMTA SINGRODIA	9460844144
NASIK	SUNITA AGARWAL	9892344435
PUNE	ABHA CHOUDHARY	9373161261
PATNA	ARBIND KUMAR	9422126725
PURULIYA	MRIDU RATHI	9434012619
PARATWADA	RAKHI MANISH AGRAWAL	9763263911
RAIPUR	ADITI AGRAWAL	7898588999
RANCHI	ANAND CHOUDHARY	9431115477
SURAT	RANJANA AGARWAL	9328199171
Sangli	Hema Mantri	9403571677
SIKAR (RAJASTHAN)	SUSHMA AGARWAL	9320066700
SHRI GANGANAGAR	MADHU TRIVEDI	9468881560
SATARA	NEELAM KDAM	9923557133
SHOLAPUR	SUVARNA BALDEVA	9561414443
SILIGURI	AKANKSHA MUNDHRA	9564025556
TATA NAGAR	UMA ARAWAL	9642556770
ROURKELA	UMA ARAWAL	9776890000
UDAIPUR	GUNWATI GOYAL	9223563020
HUBLI	PALLAVI MALANI	9901382572
VARANASI	ANITA BHALOTIA	9918388543
VIJAYWADA	KIRAN JHAWAR	9703933740
VARDHA	RUPA SINGHANIA	9833538222
VISHAKAPATTNAM	MANJU GUPTA	9848936660

INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

AUSTRALIA	RANJANA MODI	61470045681
DUBAI	VIMLA PODDAR	+971528371106
KATHMANDU	RICHA KEDIA	+977985-1132261
SINGAPORE	POOJA GUPTA	+6591454445
SHRJAH-UAE	SHILPA MANJARE	+971501752655
BANGKOK	GAYATRI AGARWAL	+66952479920
VIRATNAGAR	MANJU AGARWAL	+977980-2792005
VIRATNAGAR	VANDANA GOYAL	+977984-2377821

Editorial

Dear Readers,

Narayan Narayan.

Recently I went out for a walk. I met a young daughter-in-law in the lift who was going out for some work with her 2-year-old son. She bowed to me, and I blessed her. In the meantime, her two-year-old child freed his hand and touched my feet. I took him in my lap and loved him a lot. He was so spontaneous and so full of emotions that every cell of my body was overwhelmed by seeing the sanskars of that child.

Sanskars are the means by which you upgrade yourself by transforming your family, people around you and yourself. Team Satyug thought that this time we should talk to our readers about sanskars.

May you always be full of sanskars. With these best wishes -

Yours own,
Sandhya Gupta

To get
important message and information from NRSP Please Register yourself on 08369501979 Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

|| Narayan Narayan ||

॥ 卐 ॥

Call of Satyug

Narayan Reiki Satsang family is known for its sanskaras. Sanskar of maintaining relationships, sanskar of giving your best, sanskar of walking on the path of honesty and loyalty, sanskar of responding instead of reacting, sanskar of speaking in a slow and sweet voice. These are the sanskaras that make you royal in life, give you the true identity of being a human being. To ensure that these sanskaras are imbibed in all of us, Raj Didi gives you a new means through Surya Kiran Dhyan Sadhna in the prayers of Brahma Muhurta every day. The thought of sanskaras, on which the satsangis contemplate, meditate and change themselves and come out as their best version. Confession commitment is a process in which satsangis come online and tell how they heard, adopted the royal sanskaras and how they made their life Seven star. The word sanskar is a complete philosophy of life. It is not just following some rules or traditions, but it is that invisible thread that connects generations, gives depth to relationships, and makes a person great not only from outside but also from inside.

When a child learns to say 'please' and 'thank you', learns to understand the feelings of others, bows his head at the feet of elders, then interpret that he is not acquiring knowledge, but sanskar.

These are the values that are not learned from books, but from behavior. These are found in every form, from mother's kitchen to grandmother's stories, from father's struggle to aunt's scolding.

In today's fast-paced life, when there is a competition of show-off and achievements, even then the person who knows how to "respect", "stay calm", "be patient" and "walk on the path of truth" is rich in the true sense.

Sanskaras keep a person connected to his roots. And these roots give him the strength to stay connected to the ground despite flying high in the air.

Just as a tree stands not with its branches but with its roots, similarly a man is bigger than his sanskaras.

Sanskaras are deeply related to personality development. It works to improve our self-confidence, thinking and conduct. Sanskaras are not acquired before birth by any person but from his upbringing, family, society and experiences. These are the values that make a person feel good conduct, dedication, truthfulness, and sympathy towards others. Sanskaras are deeply related to personality development. It works to

improve our self-confidence, thinking and conduct. Sanskaras does not mean only external appearance, but it shows the right understanding and internal discipline within us. Sanskar is that priceless heritage which remains connected to us generation after generation and inspires us to walk on the path of a good life. A good sanskar orients towards becoming a true human being, who feels responsible towards society and is grateful towards his family and relations. The soul of Indian culture resides in its sanskaras. Just as the presence of soul is necessary to keep the body alive, similarly the presence of sanskaras is essential to keep our great tradition alive.

Sanskaras are the heartbeat of Indian culture. Teachings like **"Matrudevo Bhava, Pitrudevo Bhava, Atithi Devo Bhava"** are not mere sentences, but beliefs preserved for generations, which are reflected in the behavior of every Indian.

Here the child gets **Garbha-Sanskar** even before birth, and at every stage of life, he is given some sanskar education, whether it is **Annaprasan, Vidyarambh or Vivah-Sanskar**.

In Indian culture, sanskars have been given a place above religion, because following religion is also possible, only when there is moral consciousness and a sense of duty within the person.

Here sanskars build not only the individual, but the society.

A cultured citizen is the foundation of a strong nation.

Today, when the whole world is looking towards India for life values, yoga, spirituality and balance, it is important to understand that all this is born out of the tradition of sanskaras.

While in the West success is measured by achievements, in India success is measured by character, sacrifice and spirit of service.

Our culture teaches us that there is dignity in humility, not arrogance.

There is valor in kindness, and strength in tolerance. All these are expressions of sanskaras that make an ordinary life extraordinary.

Our sanskaras are recognized by our actions. It is visible in small steps every day, like how we behave with others, what is the impact of our words, and how we make decisions in difficult times. Having sanskaras makes us positive, honest and loyal, which gives us the strength to face the struggles of life in the right way. The importance of sanskaras is understood when we go through difficult times in life. It

is the sanskaras that give us the strength to not bow down but to move ahead and stick to our principles. It tells us that a person becomes great by his thoughts, conduct and decisions, not by his external display. Sanskaras do not only make us good human beings but teach us the art of living a good life. They do not teach us how to change the world but teach us that we can spread light in the world by improving ourselves.

"Sanskar is that lamp, which does not light from outside but from within. And when there is light from within, every path of life becomes beautiful."

Sanskaras do not mean that we are forced to walk in a particular direction, but it inspires us to stay true to ourselves. This is the real power, which makes us a better person in society and gives a higher purpose to our life.

Sanskaras are such seeds, which are sown in childhood and bear fruit throughout life. Family is the first school where we learn the art of living life without books. When parents live by the virtues of honesty, service and restraint in front of their children, those virtues become a part of their behavior. In today's fast-paced world, if we do not spend time with our family, then it is certain that the next generation will become emotionally hollow.

Sow the seeds of Sanskar in the family, it will become a banyan tree in the future. Give examples to children, do not preach, start living the values that you want to inculcate in them.

Sanskaras leave a deep impression, which is the key to the biggest change in life.

Come, let us also introspect whether we are just imparting education, or sowing sanskaras as well?

Because the coming generation will inherit not our words, but our behavior and values.

Narayan divine blessings with Narayan Shakti to Namrata Rathi & Vinod Rathi on their wedding anniversary (20th April) for a seven-star life and years of togetherness.

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

For a long time, Team Satyug has been bringing life-changing questions and their answers told by Raj Didi in various satsangs. Here are some questions and answers: -

Question: What should I do so that I can attain happiness as soon as possible and my work gets done easily?

Raj Didi: The measures that we will tell you to remain happy throughout life will be according to Narayan Shastra, which is the essence of all the scriptures. If you follow this, you will get what you want in your life.

Answer through Radhika: This is about those days when newspapers were very popular, just like mobile phones are popular today. Newspaper had this specialty that people's day would start with the newspaper and whether there were four or fifteen members in the house, only one newspaper would come to the house and the whole family would read it and many times even the neighbors would borrow it. There was one landline phone, the whole family used it. People of my time would surely know that the landline bell used to ring very loudly and everybody in the house could hear it. Whoever was, wherever would shout from there that the phone was ringing, pick it up. The joy that one newspaper, that one landline phone was, that joy today's young generation will never be able to understand.

Radhika further writes that in those days people's day might have started with the newspaper, but my day did not start with the newspaper. I did not wait for the newspaper to come so that I could read it and then start working. Sometimes I would glance at the newspaper to find out what was happening in the world. But after reading it, I feel that I did not need to read it because the newspaper was full of negative news and negative news anyway spreads like wildfire.

Radhika further writes that a newspaper was kept on the dining table in front of me, I started reading it spontaneously, the headline of that day was that a private airline had suffered a huge loss, and the entire front page was filled with that news. Why it happened, how it happened, what mistakes were made, everything was given in detail. Newspapers of all languages had written in exaggeration about that airline. The inside pages of all the newspapers had written the stories of those people who had once reached the heights of success but after reaching there, they fell with thud. Such negative news sends this message to our subconscious mind that if you

want to be successful, then do it thoughtfully, in the end you will fall with a thud.

Radhika further writes that after reading the entire newspaper, my mind was filled with negativity. I was thinking about the news and in the meantime my son came and said mummy, pack my lunch by 9:00 am tomorrow. I was surprised that he had to go somewhere even on Sunday...! On asking, he told me that his college has formed a group of students, and they have been given a project, so he had to go. They had to go to slum areas and see how to treat the sick people there and provide employment for the unemployed. They had to clean the place themselves and get the people there to do it. They had to explain the importance of cleanliness to the people.

Radhika further writes that as soon as I heard this, all the negativity inside me went out, with a strong feeling that good things are also happening in the world. That day I was attracted to a lot of good news.

The second news that reached me was that our acquaintance's son Keshav, who is just 23 years old, along with his friends, every Sunday collects street children and cuts their nails and hair, give them bath, teaches them and feeds them and he does all this with his pocket money. Sometimes he gets some help. Also, in their team, it is such that if you have come today, then next time you must bring one more person, so that the group keeps growing, and the service keeps increasing.

Radhika further writes that why can't such positive news become headlines of newspapers instead of negative news...?? Now whenever I read the newspaper, I look for some good news printed in it, like a watchman's son became a doctor, a washerman's son won a medal in sports. Now whenever my neighbor comes to me and tells me that there is a headline in such and such paper that so many people died there, then I tell her that this news is also printed in the paper that the watchman's son became a doctor. While eating, we discuss all the positive things on the dining table, celebrating achievements.

Radhika further writes that I not only celebrate the achievements of my own people but also celebrate the achievements of strangers. Whenever I get any positive news from anywhere like someone has achieved something in their life, I don't even know that person, still I celebrate it.

We asked her how do you celebrate...?? She said I make some sweets at home, offer it to God, thank him for bringing happiness in my home and distribute prasad

everywhere.

Radhika further writes that now when I am doing this, I am seeing that my life is getting better than before, it is becoming easier. The biggest thing is that my work is getting done very easily. When I realized this, I resolved that whatever I am doing, I should follow it.

When we were in school, we had to write answers to some questions in detail and there were some five questions whose answers had to be written in one line. I have given you a detailed answer. The one-line answer to your question is that happiness should come into life quickly, work should become easy. If you want your life to be filled with happiness, then the simple thing you must do is to start sharing happiness with others. Start doing things that bring happiness to the other person, then happiness will come to you by itself, you will not have to put in effort for yourself. Secondly, if you want your work to become easy and simple, then help in making the work of others easy, your work will become easy and simple by itself. When does your work stop when you interfere in the work of others. Is it clear ?

Question: Tell me a simple way to get name, fame and money?

Raj Didi: I will answer this question through a Marathi discourse. The Marathi discourser said that I had heard an interview of Asha Bhosle a few days ago. In that interview, Asha Didi said that she is from a very poor family. All her siblings lived a very long life. Lata Didi died at the age of 94. The second sister is 75, her brother is 84 and none of them has diabetes or BP and you all know that everyone has good name, fame and money. Asha Bhosle further said, “What is the reason for this? What could be the reason that we have reached old age with good name and fame? Many celebrities have been questioned but no finger has ever been raised on these people’s names. Their names have always been taken with respect. Asha Didi said that when they were young, Lata Didi had said “Kuthe tari ankale hote” (heard somewhere) that if you wash the feet of your parents and drink the water, then “Tar aayushya vadto” (the lifespan increases). After hearing this, Lata Didi had decided that she had to do this, and she also knew that her father would not let her wash his feet. One day, when her father was asleep, Lata Didi poured water under his feet. As soon as she poured water, he woke up and asked, “What are you doing...?” She said, “Father, we are massaging your feet.” Her father told Lata Didi, “I am sleeping right

now, don't massage now." By then, Lata Didi had poured a glass of water on his feet. Lata Didi and all her brothers and sisters drank that Charanamrit. The result is that today all of them have got good names, fame and money.

Question: Didi, many times we face many difficulties due to Pitra Dosh in the Kundli, so Didi, please tell me some remedy to cure Pitra Dosh.

Raj Didi: - When do we come to know about Pitra Dosh? When we show our Janam Kundli. Isn't it? I can understand this. Only when you go and show it, do we come to know that there is Pitra Dosh in the Kundali. When we are going through good times, do we go and show our Janam Kundali? Do we ask, how long will this continue? When times are not going well, then you go and show your Janam Kundali(horoscope). Right. When you showed your Kundali, then you came to know that there is Pitra Dosh. Then the thought came to your mind that if there is a Dosh, then you will have to bear the price. Now tell me who is called Pittar Ji..?? As far as I understand, it is that the elders in our house, grandfathers, great grandfathers, we count them all as Pitra Devta. Right. If they gave you any trouble while you were alive, then why will they give it after your death? Now I understand that this is not Pitra Dosh, this is a spelling mistake. Narayan Shastra says that look, your **Pitra (**ancestors) are sad and **rosh** means they are angry, they are furious. Why are they sad? First understand. Why do you go to show your birth horoscope ? When they are sad. They are feeling sad seeing you sad. That is why they are sad. Did you understand this much. Is it acceptable? That they are sad seeing you sad. Why do they get angry with you? When does this situation come? When you do something that is bad, wrong, or improper. Then they get angry cause you do a wrong act? Now what did we do ? We took "D" from dukh and took "sh" from rosh. When you come to know that there is Pitra Dosh in your Kundali, then you must introspect that what wrong are you doing ? Many people also come and say that we went and showed our Kundali and found Pitra Dosh, we got the pujas done but even after that this dosh has not gone away. Hey, as long as you keep making mistakes, it will not go away. Did you understand..?? Hence stop doing things that are wrong, inappropriate then this dosh will go away. Next time when you go to show your Kundali, it will be said that the Pitra Devta are happy.

Youth Desk

Our sanskars are our real heritage - this statement is cent percent correct.

The real heritage of every civilization is its sanskars. Although it is the fundamental duty of every human to take care of natural heritage, every human is bound by the boundaries of countries and time. Knowledge of the culture of the country in which one lives, its observance and to acquaint the coming generation with our culture as well as to make them follow it- this should be our primary duty.

Sanskars have two main forms: internal and external. The internal form is related to lifestyle and rules, while the external form is related to customs. The purpose of sanskars is to develop good qualities in a person.

Sanskars held special importance in ancient India, and they made a person pure in both this life and the next life.

Sanskars are formed from birth to the age of 21 years.

During this period, the habits of the child become sanskars. **Parents influence their sanskars on the children and the atmosphere of the house also plays an important role in the formation of sanskars**.

Our culture teaches that parents are equal to God. Shri Ganesh Ji also considered his parents supreme and became the first to be worshipped among all the gods.

Children are made aware of the values of life from childhood.

Whatever behavior the parents show, children automatically imbibe it by imitating them.

When a child sees at home that his parents wake up in the morning, finish their daily chores, meditate and worship, then the child also starts following the same things. Respectful behavior towards elders, love for relatives, fulfilment of responsibilities with devotion - all these sanskars get imbibed in a child automatically. When such children reach youth, they build a healthy society.

Narayan Reiki Satsang Parivar's curriculum for youth **- Leading a Meaningful Life - highlights the sanskars and talks about their importance.** Our youth are the carriers of our sanskars. Our heritage of sanskars is now in their hands.

There is an appeal to the youth to follow the values they have received from their culture, their parents and their society and make the coming generations follow them. Spread this message to everyone.

India is known for its values all over the world.

Sanskars (values) are our identity. Sanskars (values) are our pride.

Children's Desk

I, along with a few of my senior friends and relatives, met a young couple at their home. We were awed by the Indian welcome of Namaskarams, Matha Tek pranam, and welcome drink of Shikanji made by the couple. The girl whose FB page showed her in an INDO Western outfit was dressed in a beautiful salwar kameez with dupatta, gracefully adorned and elegant. The smile and the warmth of hospitality in every action made all of us utter... lovely Samskaras. Thus, this topic, our Samskaras, our heritage was suggested to our editorial team, and immediately, team Satyug got into action.

Our Indian samskaras are very rich and vibrant in its heritage.

We stand apart from the world because of our rich cultural heritage. The Samskaras are passed on to us generation after generation, decades after decades. The Indian Samskaras, culture stresses on giving respect to every living and non-living, old and young, big or small. India as a culture believes that unconditional love, faith, respect and goodwill can attract a seven-star life for all and make heaven on this Earth.

Talking about sanskaras, this is the land where a disciple like Ekalavya considered the great **Dronacharya as his Guru**. He practiced archery by daily prostrating in front of the idol of Dronacharya without his knowledge. When Dronacharya happened to learn about his archery skills, he realized that Ekalavya could even surpass Arjuna in archery. The Guru asked Eklavya for his thumb as a Guru Dakshina. The great disciple whilst even batting an eye cut his thumb, knowing that he could never again use his bow and arrow and offered it to the guru. This is our heritage.

We have the story of Panduranga where Pundalik, a devout follower of Krishna, was known for his unwavering devotion to his parents. He prioritized their needs above all else, even neglecting the Lord himself when he came to visit. The Lord was impressed by Pundalik's devotion to his parents; Krishna manifested in his form as Vithoba at Pundalik's doorstep.

Pundalik requested that Vithoba remain on a brick in the courtyard, promising to stay with his devotees forever. Vithoba agreed and has been worshipped as such at Pandharpur ever since.

If we plunge into the stories of our mythological scriptures, Hindu scriptures, folk fare, they convey to us the importance of dharma, righteousness, self-discipline, self-control, importance of relationship, importance of truth, honesty, integrity, morality and the consequences.

Let us follow our sanskaras and lead a seven-star life.

||नारायण नारायण||

Under The Guidance of Rajdidi

How by joining the satsang, satsangis realize their mistakes and by confessing in Narayan Bhawan, they rectify their mistakes and easily attract blessings in life. In this issue of Satyug we bring to you their confession and reformation.

Pledge to adopt positivity

I had to go out for 2-3 days, but both the children had to stay at home with mother-in-law and husband. Two days before my departure, suddenly my cousin sister-in-law came to the house, which I did not like at all. My husband knew but I did not know. I also told my husband that she also had to come now, she should have come later. When I returned after three days, I came to know that because of sister-in-law, all the people of the house were able to do their work on time, husband was able to go to the shop, and sister-in-law had also taken care of mother-in-law's health. I apologize to you and my sister-in-law as well. From now on, I will welcome everyone and will not bring negative thoughts into my mind.

Prayers bear fruit

In my house, the husband and wife were quarreling with each other, and their relationship was on the verge of breaking. I also made written prayers for them. Result – They have been reconciled in the village panchayat. Thanks to you Didi.

Results of the discussion

My sister-in-law's children changed school many times. I discussed it everywhere. The result is that due to circumstances, my child also had to change school four times and on the advice of a tuition teacher, I had to delay his studies by two years. Then I understood my mistake, confessed in satsang. I apologize.

Sharing from Australia

1) When I first faced a negative situation, I thought why only me? Now I think that Narayan has given me an opportunity to make me stronger. Thanks to you.

2) All the tasks written in my list have been completed, whether it is a new house, husband's promotion or children's school admission or solution to mother's health problem, Narayan's blessings have been showered in every field.

3) My children were using TV and mobile too much due to which there was a

Narayan Narayan situation in the house. This was the first wish written in the Navratri prayer, and as soon as the first day's prayer was completed, the children automatically left the mobile and TV and started studying and became alert and focused on their work.

4) Since I have been associated with prayers, many jackpots have been received. I prayed for the health of three elderly people in the house. Now all three are healthy.

5) My son is a cricket player in Sydney, we prayed for his selection, but he did not get selected. We were a little disappointed but believed in Narayan that Narayan has better plans for us. After just a few days, he got selected on an even bigger platform. Raj Didi, my heartiest salute to you.

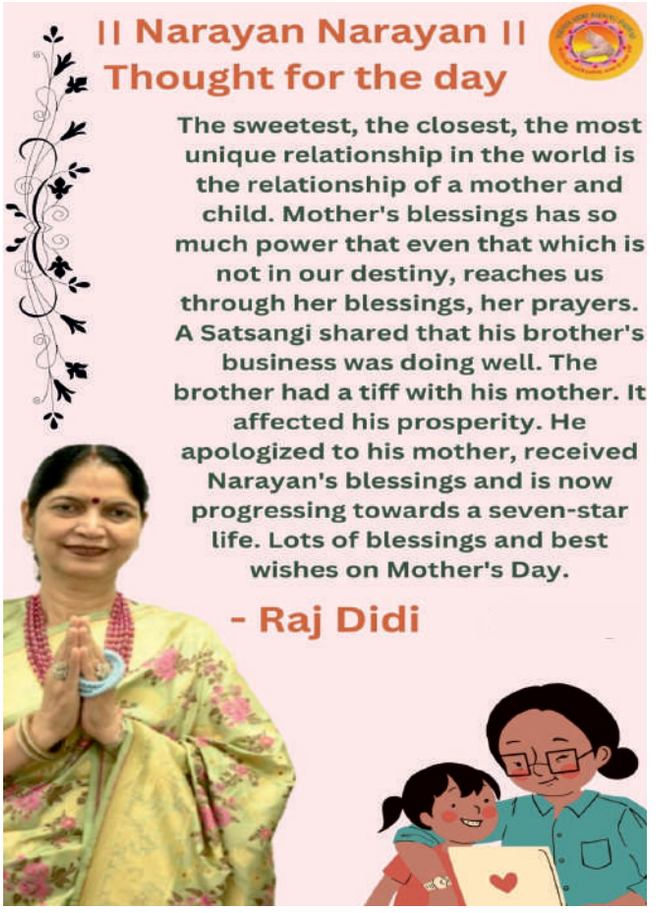

A plate of Sanskaras

A grandmother lived in a small house in the village; her name was Saraswati Devi. Though she was over 75 years old, she still had a childlike mind. Her son, daughter-in-law and grandson Aarav lived with her. Aarav was just ten years old, very naughty and quick-witted.

Every evening, grandmother used to make Aarav sit beside her and tell him stories, from Ramayana, Mahabharata, or sometimes stories from her childhood. One day grandmother said to Aarav,

"Son, no matter how much you study in life, if you don't have sanskaras, then that education is incomplete."

Aarav asked innocently, "Grandmother, what are these sanskaras?"

Grandmother smiled and said, "You get up early tomorrow morning, I will give you 'a plate of Sanskaras."

The next morning Aarav woke up and ran to grandmother. Grandma placed five things on a plate

1. One roti,
2. Some jaggery,
3. One basil leaf,
4. One diya,
5. A small mirror.

Aarav was surprised. Grandma said:

- Roti teaches us to share, that whatever you have, give it to others as well.
- Jaggery teaches sweetness, in your words, in your behavior.
- The basil leaf teaches faith and tradition, which keep us connected to our roots.
- The diya tells us to be a light, spread light in the darkness of others.
- And the mirror reminds us to look at ourselves every day, evaluating our actions.

Aarav kept listening silently, then said, "Grandma, I will look at this plate every day."

Grandma's eyes filled with tears because values are not just taught, they are shown by living.

॥ 卐 ॥

The Sanskaras of Rupee Ten

One day a woman went to the market with her seven-year-old son Neel. She stopped at a nearby sweet shop and bought some samosas and rasgullas. The shopkeeper made the bill quickly and the woman handed a ₹ 200 note to the shopkeeper.

The bill was Rs 190, but by mistake the shopkeeper gave ₹ 20 back instead of ₹ 10.

The woman took the money and started walking. Neel gently pulled his mother's hand and said,

"Mom, he has given ₹ 10 more..."

The mother said, "Yes son, I saw it. But it is a small matter, let it go."

Neel stopped. He took out his piggy bank and put a ₹ 10 coin on his mother's palm.

He said, "You can take this, but give that brother his money back."

The mother was shocked, she said, "Why would you give it?"

Neel's innocent but deep words were:

"Because I don't want anyone else to do wrong because of me."

Mother's eyes filled with tears...

She returned to the shop and gave back ₹ 10.

Lesson:

Values don't come by looking at age, they grow from the seeds sown in the small corners of every home.

Sometimes children teach what adults forget - honesty, sensitivity, and accepting right as right.

Narayan divine blessings to Meghana Taparia for her marriage on 5th May 2025. All the events are grand and divine, and every event is the way she wants. She is blessed with all happiness.

The key to the lock

A boy was admitted to a famous school in the city. His name was Naman. He was bright in studies, gentle in behavior, but the most special thing was his politeness and humility.

One day in the class, someone stole the teacher's precious watch from his desk. The whole school was shaken. All the children's bags were checked, questions and answers were asked but nothing came out.

The next day the principal called all the children in the hall and said, "Today everyone will wear a blindfold, and we will check everyone's bags again." The atmosphere was tense.

When everyone was being searched, that watch was found in Naman's bag.

Everyone was shocked.

But the principal did not take anyone's name. He asked the children to remove the blindfold and said,

"Today I only wanted to know the truth, it was not my intention to embarrass them."

Later, Naman went to the principal alone and said crying,

"Sir, I did not steal that watch... the child sitting next to me had kept it there. I was scared, I could not say anything."

The principal asked, "Then why did you keep quiet?"

Naman said, "My father has taught me that if you are right, then show the difference not by voice but by your values. I knew that the truth would come out, I don't know how to make noise."

The principal's eyes got wet.

He said, "Son, the key to a lock is always small, but it opens a big door. Your values are the keys that will open your future."

Lesson:

Sanskaras is a heritage that neither can the world snatch away nor time can erase.

GOLDEN SIX

1) Prayer -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

2) Energize Vaults - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

3) Shanti Kalash Meditation – Visualize a Shanti Kalash (Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

4) Value Addition - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

5) Energize Dining Table/ Office table - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

6) Sun Rays Meditation - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com